विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2559, ज्येष्ट पूर्णिमा, 2 जून, 2015 वर्ष 44 अंक 12

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

ये झानपसुता धीरा, नेक्खम्मूपसमे रता।
देवापि तेसं पिहयन्ति, सम्बुद्धानं सतीमतं॥

१८१, धम्मपदपाळि, बुद्धवग्गो

जो पंडित (जन) ध्यान (करने) में लगे रहते हैं, और त्याग और उपशमन में लगे रहते हैं, उन स्मृतिमान संबुद्धों की देवता भी स्पृहा करते हैं।

सतत साधनारत शास्ता

*(पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्काजी द्वारा उद्धरणों सहित लिखी पुस्तक '**तिपिटक में सम्यक संबुद्ध**' से साभार संकलित)*

एक समय कोशल-नरेश प्रसेनजित अपने अधीनस्थ गणराज्य शाक्य प्रदेश की शासकीय यात्रा पर निकले। शाक्य सीमा पर स्थित चेतियगिरि निगम के शांत और सुरम्य वातावरण से प्रभावित होकर वहीं कुछ देर विश्राम करने लगे। इतने में एक विचार कौंधा कि भगवान बुद्ध बहुत ही शांतप्रिय और मौनप्रिय हैं। कहीं वे यहीं कहीं आसपास तो नहीं हैं? किसी से पूछने पर पता चला कि हां, यहीं पास के कांतार में साधनारत हैं। यह जानकर उसकी इच्छा प्रबल हो उठी कि उनसे मिलना है। मिलने के लिए रथ पर सवार होकर चल पड़ा परंतु थोड़ी दूर जाने पर आगे रथ जाने का कोई मार्ग न देख कर पैदल ही चल पड़ा। प्रश्रब्धि और शांति से परिपूर्ण ध्यानमय वातावरण वस्तुतः बुद्ध और उनके शिष्यों के नाम के साथ जुड़ गया था।

भगवान बुद्ध एकांत-प्रिय और मौन-प्रिय थे। इसका अर्थ यह नहीं कि वे शास्ता की जिम्मेदारियों से कतराते थे। पुराने शिष्यों और नये धर्म-याचकों से उनका पारस्परिक संबंध सतत बना रहता था। अपनी पैंतालीस वर्षों की शासनचर्या में उन्होंने जितने धर्मोपदेश दिये, उतने धर्मोपदेश मानवजाति के लंबे इतिहास में किसी भी एक धर्मगुरु ने नहीं दिये। वे जितने जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं से मिले, उतनों से कोई अन्य धर्मगुरु नहीं मिल पाया। उनका सारा जीवन 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' अनुकंपा से भरा हुआ था और वे सदा सदर्थ बांटने के काम में ही लगे रहते थे। भगवान के बारे में यह कितना सही कहा गया है –

असम्मोहधम्मो सत्तो लोके उप्पन्नो बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सान'न्ति।

मज्झिमनिकायो १.५०, भयभेरवसुत्तं

– मोह, मूढ़ता से मुक्त, बहुतों के हित के लिए, बहुतों के सुख के लिए, संसार पर करुणा बरसाने के लिए, देवताओं और मनुष्यों के भले के लिए, हित और सुख के लिए एक व्यक्ति संसार में उत्पन्न हुआ है।

वह किस कदर लोकहित में लगे रहते थे, इसका वर्णन करते हुए उन्होंने स्वयं कहा –

अञ्ञत्र असितपीतखायितसायिताअञ्ञत्र उच्चारपस्सावकम्मा, अञ्ञत्र निद्दाकिलमथपटिविनोदना अपरियादिन्नायेवस्स, सारिपुत्त, तथागतस्स धम्मदेसना, अपरियादिन्नंयेवस्स तथागतस्स धम्मपदब्यञ्जनं, अपरियादिन्नंयेवस्स तथागतस्स पञ्हपटिभानं।

मज्झिमनिकायो १.१६१, महासीहनादसुत्तं

– खाने, पीने और शयन के समय को छोड़ कर, मल-मूत्र त्यागने के समय को छोड़ कर, निद्रा और थकावट को दूर करने के समय को छोड़ कर, हे सारिपुत्त, तथागत की धर्मदेशना अखंड बनी रहेगी, तथागत की धर्मपद-व्यंजना अखंड बनी रहेगी, तथागत की प्रश्नोत्तरी अखंड बनी रहेगी, और सचमुच वह अखंड ही बनी रही।

विश्राम एवं ध्यान

इस प्रकार सतत सेवा में लगे रहने के लिए उन्हें समय-समय पर शरीर को विश्राम देना पड़ता था। यह विश्राम ध्यान द्वारा ही संपन्न होता था। भगवान को भी बार-बार ध्यान में संलीन होना पड़ता है, यह देख कर किसी के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि –

अज्जापि नून समणो गोतमो – क्या आज भी श्रमण गौतम,

अवीतरागो अवीतदोसो अवीतमोहो – वीतराग, वीतद्वेष, वीतमोह नहीं है?

तस्मा अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवति।

– तभी तो अरण्य में शून्य-वनस्थली का, एकांत निवास का सेवन करता है।

इस मिथ्या संशय का निराकरण करते हुए भगवान ने कहा --

द्वे खो अहं, ब्राह्मण, अत्थवसे सम्पस्समानो अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवामि– अत्तनो च दिट्ठधम्मसुखविहारं सम्पस्समानो, पच्छिमञ्च जनतं अनुकम्पमानो"ति।

(म० नि० १.५५, भयभेरवसुत्त)

-- वे एकांतवास का सेवन इन दो कारणों से करते हैं--

एक तो – अपने इस समय के (शारीरिक) सुख- विहार के लिए सम्यक विपश्यना करते हुए,

और दूसरे – भावी जनता पर अनुकम्पा करते हुए।

आखिर मानव-शरीर की अपनी सामर्थ्य, सीमाएं हैं। चाहे भगवान बुद्ध का ही शरीर क्यों न हो, उसे विश्राम की आवश्यकता होती ही थी। इसके अतिरिक्त भगवान दूरदर्शी थे, देखते थे कि आने वाली पीढ़ियों के विपश्यना-गुरु स्वयं तो विपश्यना करेंगे नहीं और दूसरों को विपश्यना करने का उपदेश देते रहेंगे। कहीं ऐसा न होने लगे। उन्हें विपश्यना-गुरु के आदर्श जीवन की परंपरा स्थापित करनी थी। नितांत वीतराग, वीतद्वेष, वीतमोह हो जाने पर भी भगवान स्वयं ध्यान करना नहीं छोड़ते थे। यह जान कर भावी आचार्य भी जब औरों को विपश्यना करने के लिए कहेंगे, तो स्वयं भी विपश्यना करते हुए ही उन्हें प्रोत्साहित कर पायेंगे। जो गुरु अपनी शिक्षा का स्वयं पालन नहीं करता, उसके शिष्यों से यह

अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे उस शिक्षा का पालन करेंगे। भावी आचार्य कहीं ऐसी भूल न करने लगें, इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन पर अनुकंपा करते हुए भगवान समय-समय पर स्वयं ध्यान-संलीन होते थे, न कि अपने राग-द्वेष या मोह दूर करने के लिए। उनके ये विकार तो सर्वथा विनष्ट हो ही चुके थे।

एकांत ध्यान की ऊर्जा

लोक-संपर्कजन्य श्रम के कारण शारीरिक ऊर्जा का क्षीण होना स्वाभाविक था। रूपकाया की इस क्लांति को दूर करने के लिए, भगवान के लिए विश्राम आवश्यक था। ध्यान-संलीनता से काया को जो विश्राम मिलता है, वह अतुलनीय है। अतः भगवान अपनी दैनिक दिनचर्या में ध्यान के लिए समय निश्चित रखते थे, ताकि धर्मकाया द्वारा जिस धर्म-ऊर्जा का प्रजनन हो, वह रूपकाया के लिए आवश्यक ऊर्जा की पूर्ति करे। सामान्य दैनिक जीवन में जो लोक-संपर्क होता था, उससे आयी थकान को दूर करने के लिए नित्य नियमित समय का ध्यान पर्याप्त था। परंतु जैसे-जैसे भगवान की प्रसिद्धि बढ़ती गयी, वैसे-वैसे लोक-संपर्क भी बढ़ता गया।

भगवान इस बात को खूब समझते थे कि कहीं भावी आचार्यगण अपने आपको जन-शास्ता मानकर अपनी स्वयं की साधना न छोड़ दें और यह कहें कि क्या करें, बहुत अधिक व्यस्त हो गया, साधना के लिए समय कहां से लाऊं? इसीलिए उन्होंने मौन और एकांत साधना को अधिक महत्त्व दिया और उसका अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

नमस्कार धर्मकाया को

शाक्य जनपद कोशल-नरेश प्रसेनजित के अधीन था। अतः सभी शाक्य अपने शासक प्रसेनजित को अभिवादन करते थे; हाथ जोड़ कर सम्मान-सत्कार करते थे; प्रणाम करते थे। प्रसेनजित जानता था कि श्रमण गौतम शाक्य-कुल से प्रव्रजित हुए हैं, परंतु फिर भी भगवान उसे नमस्कार नहीं करते थे। वही भगवान को अपूर्व आदरपूर्वक नमस्कार करता था। यथा –

भगवान के चरणों में सिर झुका कर, भगवान के चरणों को वह मुँह से चूमने लगा, हाथों से दबाने लगा, और अपना नाम सुनाते हुए कहने लगा – भंते, मैं कोशलेश प्रसेनजित हूं।

इस प्रकार का सम्मान कोई शाक्य प्रसेनजित के प्रति भी नहीं प्रकट करता था, जैसा कि प्रसेनजित, शाक्य-श्रमण भगवान बुद्ध के प्रति प्रकट करता था। इस प्रकार सम्मान करते हुए प्रसेनजित से भगवान ने पूछा – महाराज, क्या बात देख कर इस शरीर के प्रति इतना गौरव प्रकट कर रहे हो? ऐसा विचित्र सम्मान प्रकट कर रहे हो जो कि मित्रता का प्रतीक है!

इस पर प्रसेनजित ने उत्तर दिया – **अत्थि खो मे, भन्ते, भगवति धम्मन्वयो।**

भंते, भगवान में मेरा धर्मअन्वय है। धर्म के कारण ही मैं भगवान का अनुगामी हूं।

(म० नि० २.३६६-३६७, धम्मचेतियसुत्त)

मुझे भगवान में समन्वित धर्म दीखता है। भगवान से मेरा धर्म का संबंध है।

पूजन धर्म का है, धर्मकाया का है, रूपकाया का नहीं। यह आदर-सत्कार इसीलिए है।

इसलिए नहीं है कि – श्रमण गौतम की काया सुंदर है और मेरी असुंदर; इसलिए भी नहीं कि – श्रमण गौतम ऊंची जाति के हैं और मैं नीची जाति का; इसलिए भी नहीं कि – श्रमण गौतम बलवान है और मैं बलहीन; इसलिए भी नहीं कि – श्रमण गौतम महाप्रतापी हैं और मैं कम प्रतापी हूं।

(बल्कि) धर्म का ही सत्कार करते हुए, धर्म का गुरुकार करते हुए, धर्म का सम्मान करते हुए, धर्म का पूजन करते हुए, धर्म का अभिवादन करते हुए, (वह) तथागत को नमन करता है।

इसलिए यही समझना चाहिए कि –

धम्मोव सेट्ठो जनेतस्मिं – लोगों में धर्म ही श्रेष्ठ है।

(दी० नि० ३.११७, अग्गञ्ञसुत्त)

इसलिए धर्म ही पूज्य है, धर्मकाया ही पूज्य है।

अतः साधको, इन उद्धरणों से प्रेरणा प्राप्त कर हम भी अपने आपको दैनिक ध्यान और मौन ऊर्जा से भरते रहें। इसी में सबका मंगल कल्याण समाया हुआ है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

अलविदा टंडनजी (जुलाई १९२८ - मई २०१५)

टंडनजी का नाम सुनते ही एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा सामने आता है जो उम्रदराज थे, शालीन थे, जिनके मुख पर सदा मुस्कान छायी रहती थी, जिनके बाल सफेद थे (बलक्ष शीर्ष) और जो पालि गाथाओं का पाठ करने में आनंद लेते थे।

टंडनजी उन व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने पूज्य गुरुजी के साथ बहुत निकटता से काम किया था। उन्होंने विपश्यना का प्रथम शिविर जयपुर में १९७५ में किया था। उस शिविर में उनके साथ और भी वरिष्ठ सरकारी अधिकारी थे। उन्होंने कई क्षेत्रों में पू. गुरुजी की सहायता की। गुरुजी उन्हें सहायक आचार्य बनाना चाहते थे पर उन्होंने 'ना' कह दिया। तब गुरुजी ने उन्हें अपने लिए संदर्भ ढूंढ़ने और संक्षिप्त नोट तैयार करने को कहा, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। १९८६-८७ में गुरुजी ने उन्हें हैदराबाद अपनी सहायता करने के लिए बुलाया। टंडनजी ने इसे स्वीकार किया और तैयारी में लग गये। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लाज टंडन ने भी उनके साथ काम करने की इच्छा प्रकट की। हैदराबाद जाकर वे गुरुजी से मिले।

शिविर आरंभ होने के प्रारंभ में ही गुरुजी ने उन्हें साधकों को चेक करने को कहा। टंडनजी ने कहा कि मुझे तो यह काम आता नहीं और न ही मैंने कभी यह काम करते हुए किसी का अवलोकन किया है। इसके लिए मैंने प्रशिक्षण भी नहीं लिया है। मैं नहीं कर सकता। गुरुजी ने कहा कि तुम मेरे प्रतिनिधि के रूप में काम करोगे। चिंता क्यों करते हो? जैसा मैं कहता हूं, वैसा करो। उन्होंने सिर झुकाकर गुरुजी की बात मान ली और प्रथम बार ही बहुत सफलतापूर्वक काम किया। उन्होंने गुरुजी के साथ दूसरा शिविर जयपुर में संचालित किया। इस तरह उनको सहायक आचार्य नियुक्त किया गया।

उसके बाद तो उन्होंने भारत तथा विदेशों में अनेक शिविर संचालित किये। उन्होंने स. आचार्यों के लिए तथा धर्मसेवकों के लिए कार्यशालाएं संचालित कीं। पालि प्रशिक्षण की उनकी कार्यशालाएं बहुत लोकप्रिय हुईं क्योंकि उनके सिखाने का ढंग अनूठा था। वे पालि उस तरह नहीं सिखाते थे जैसे और लोग सिखाते हैं बल्कि गुरुजी की प्रातःकालीन वंदनाओं और चुने हुए सुत्तों के सहारे सिखाते थे। हर कार्यशाला में वे कुछ नया अवश्य पढ़ाते थे। जब कभी वे नयी योजना के बारे में सोचते, गुरुजी से मिलते और उनसे विस्तार में चर्चा करते। जब गुरुजी अनुमोदन करते तभी वे उसका कार्यान्वयन करते। उन्होंने भारत, फ्रांस तथा ताईवान आदि में इस तरह पालि की लगभग २० कार्यशालाएं संचालित कीं। उन्होंने बहुत दिनों तक दिल्ली में कई लघु शिविरों का संचालन भी किया।

पालि कार्यशालाएं संचालन करने के अतिरिक्त उन्होंने कई ग्रंथ लिखे, कई संकलन तैयार किये और विपश्यना विशोधन विन्यास से हिंदी में प्रकाशित होने वाली कई पुस्तकों का संपादन भी किया। वे

गुरुजी के लिए संदर्भ ढूंढ़ने में भी सहायता करते थे और इस तरह के काम वे जीवन के अंत तक करते रहे। वे अभी भी भगवान द्वारा घोषित अग्र श्रावकों की जीवनी पर काम कर रहे थे। अग्रश्रावकों पर ऐसी ३२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

उन्होंने निम्नलिखित पुस्तकें लिखीं – आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय - डॉ. ओम प्रकाश जी; परम तपस्वी श्री रामसिंह जी; पातंजल योगसूत्र (हिंदी एवं अंग्रेजी); तिक-पट्ठान; सम्राट अशोक के अभिलेख; सुत्तसार भाग- १, २, ३; केंद्रीय कारागृह जयपुर। विपश्यना: लोकमत भाग - १ और २ का संकलन भी किया।

१९९९ में उन्होंने यह कहते हुए कि वे बिना नाम के सम्यकदेव की तरह धर्म-सेवा करना चाहते हैं, गुरुजी से अपना नाम स. आचार्यों की सूची से हटा देने का अनुरोध किया। २००८-९ में वे अचानक कैंसर से सख्त बीमार पड़े। ठीक हुए तो पुनः कार्य में लग गये।

बहुत दिनों से बुद्ध-स्थानों की यात्रा करने की उनकी इच्छा थी। अतः मार्च २०१५ में उन्होंने उन क्षेत्रों अर्थात श्रावस्ती, कपिलवस्तु, लुम्बिनी और कुशीनगर का परिभ्रमण किया। दिल्ली लौटे तो लगा कि वे पीलियाग्रस्त हो गये हैं। उन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती किया गया। जब सघन चेकिंग हुई तो पता चला कि कैंसर पूरे शरीर में फैल गया है। डॉक्टरों ने बहुत प्रयास किया परंतु उनके शरीर पर किसी दवा का असर ही नहीं हुआ। अतः सानुरोध घर आ गये। परंतु जरूरी समझकर २९ अप्रैल को उन्हें पुनः अस्पताल में भर्त्ती कराया गया। वे भोजन नहीं कर सकते थे इसलिए नली के सहारे उन्हें तरल पदार्थ दिया जाने लगा। १-५-२०१५ को अस्पताल से पुनः घर लाए गये।

वे निरंतर साधनारत थे और उनके साथ परिवार के लोग भी साधना करते थे। नली द्वारा भोजन लेने तथा दांत के अभाव में वे ठीक से अपनी बात नहीं कह पाते थे। लेकिन जब कभी उनसे पूछा जाता कि गुरुजी के दोहों का टेप लगाया जाय या सामूहिक साधना का तो दोहों का टेप लगाने को कहते। जब कभी कोई उनसे मिलने आता और उनकी बेटी रश्मि यह कहती कि 'पापा' फलां व्यक्ति मिलने आये हैं तो वे आंखें खोल देते थे।

सब देखते थे कि वे होश में हैं। उनके चेहरे पर जरा भी बेचैनी नहीं थी। १० मई को लगभग ७ बजे शाम को उन्होंने सेवारत परिवार के सदस्यों को और सेवा करने से मना किया, दो गहरी सांसें ली और शांतिपूर्वक इस संसार से कूच कर गये।

उनके परिवार में श्रीमती लाज टंडन के अतिरिक्त एक बेटी और दो बेटे हैं।

एक स्मारिका में उन्होंने लिखा था--

"मैं धर्म के प्रति कृतज्ञता दो प्रकार से व्यक्त करना चाहूंगा:--

१. मेरे रग-रग में धर्म समा जाय।

२. शुद्ध धर्म के बारे में सबको बताकर।"

उन्होंने और भी लिखा-- "प्राचीन काल में ज्योतिक नामक एक धनी व्यापारी था। वह रात में घर में दीप न जलाकर बहुमूल्य रत्नों से घर को प्रकाशित किया करता था। मेरे लिए तो बुद्ध, धर्म और संघ ही बहुमूल्य रत्न हैं। मेरी इच्छा है कि ये तीनों सिर्फ रात में ही नहीं, रात और दिन मुझे प्रकाशित करते रहें।"

उन्होंने सही माने में अपने जीवन को सार्थक बनाया।

उन्हें शांति मिले और शीघ्रातिशीघ्र निर्वाण की प्राप्ति हो, यही मंगल कामना। अलविदा टंडनजी!

केंद्र सूचनाएं

धम्म निरञ्जन विपश्यना केंद्र, नांदेड

गोदावरी तट पर स्थित यह स्थान सिक्ख समुदाय में हजूर साहिब नांदेड के नाम से जाना जाता है। सर्वे नं. ३१, न्यू डंकिन, नांदेड में लगभग पांच एकड़ जमीन पर इस विपश्यना केंद्र के निर्माण का कार्य आरंभ हुआ है। तीन चरणों के प्रथम चरण में कुछ निवास, शौचालय, धम्महॉल (१२० के लिए), किचन, रास्ते, बिजली-पानी आदि की प्राथमिक सुविधाओं को रखा गया है। जो भी साधक-साधिकाएं इस महती पुण्य योजना में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं। **संपर्क:** कार्यालय- निसर्गांजलि, किशोर नगर, भाग्यनगर, नांदेड-४३१६०२, फोन- ०९४२२१-७३२०२, ईमेल: svk9422173202@gmail.com; **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया**, अकांउट नं.: 342902010008665, IFSC-UBINO. 534293, विपश्यना समिति, नांदेड.

धम्म पुष्कर, राजस्थान

धम्म पुष्कर पर पहला २० दिवसीय शिविर नवंबर १५ से दिसंबर ६ तक होगा। इसे तथा बहुत-सी साधिकाओं के अनुरोध को ध्यान में रखकर महिलाओं के लिए ८ आवास निर्माण कार्य आरंभ है। अन्य योजनाओं में एक मिनी धम्महॉल (35X30) और पगोडा का विस्तार (वर्त्तमान संख्या २९ शून्यागार से ३३) करना है। अधिक जानकारी प्राप्त करें www.puskar.dhamma.org से। **संपर्क**-- विपश्यना केंद्र पुष्कर, Bank: Indian Bank; Jaipur Road, Ajmer, A/c: 517444214, IFS Code: IDIB000A006, MICR Code: 305019001; Tel. 1.Mr. Ravi Toshniwal, 9829071778; 2. Mr. Anil Dhariwal, 9829028275. Email: info@toshcon.com.

धम्म लद्ध, लद्दाख में हुए निर्माण कार्य

यहां के भवन प्री फेव तथा पैसिव सोलर हैं, ऐसा कि जब खूब सर्दी पड़ेगी अर्थात तापमान– १२ सेन्टीग्रेट होगा तो भी कमरों को गर्म करने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे भविष्य में शीतकाल में बिजली पर खर्च कम होगा। प्रथम चरण में २५ साधक एवं २५ साधिकाओं के लिए आवास उपलब्ध होगा। अब तक मुख्य धम्महॉल, पुरुष/महिला सहायक आचार्य निवास, साधिकाओं के आवास तथा शौचालय, मिनी धम्महॉल, भोजनकक्ष, रसोईघर है। जो भवन बनने हैं – पानी का टैंक, कंपाउंड की दीवार, पुरुष साधकों के आवास तथा शौचालय। बोरवेल से जलापूति हो गयी है। **संपर्क** : लद्दाख विपस्सना ट्रस्ट, शाखा: भारतीय स्टेट बैंक, लेह; A/cNo: 31269868313; IFSC Code: SBIN0001365.

धम्म आवास विपश्यना केंद्र, लातूर

५० साधकों के लिए धम्महॉल के निर्माण का कार्य आरंभ हो चुका है। साधक इस पुण्य कार्य का लाभ ले सकते हैं। **संपर्क:** लातूर विपश्यना समिति, बॅक खाते - ICICI Bank, शाखा - लातूर Saving A/C No. - 034101001946 **फोन संपर्क:** आकाश कामदार - ९९७०२७७७०१, भुतडा द्वारकादास - ९६७३२५९९००, जवळगे रमेश - ९०२८२४२९०२

धम्म अरुणाचल, तिरुवन्नमलाई, तमिलनाडु

गत वर्ष इस केंद्र का निर्माणकार्य आरंभ हुआ। अब तक ३६ साधकों के आवास, २ आचार्य-कक्ष, पानी के ३ टैंक एवं प्राथमिक कार्य पूरे हो चुके हैं। निसर्ग-संतुलन बनाने वाली नयी तकनीक का उपयोग करते हुए लगभग ४० प्रतिशत खर्च कम किया जा चुका है। फिलहाल ६० साधकों के लिए ध्यान-कक्ष, दो बिस्तरों वाले महिला निवासादि का काम चल रहा है। इन महत् फलदायी कार्यों को संपन्न करने में सहयोग देने के इच्छुक साधक-साधिकाएं कृपया संपर्क करें-- Bank Details: A/c no: 50200008243761, A/c Name: Dhamma Arunachala; IFSC Code- HDFC0000010, HDFC Bank Ltd., Besant Nagar, Chennai-600090. Email: info@arunachala.dhamma.org; **Website:** www.arunachala.dhamma.org

---

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

१. डॉ. हमीर गानला, श्रीलंका के **समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य** की सहायता
२. श्री मदन मुथा, गोवा एवं कोंकण क्षेत्र के **क्षेत्रीय आचार्य** की सहायता
३. श्री सीताराम साहू, **धम्म गढ़,** बिलासपुर के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
४. श्री अनिल माली, **धम्म जलगांव**, जलगांव के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
५. श्रीमती दीपा नारखेडे, **धम्म जलगांव**, जलगांव के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
६. श्री सज्जन कुमार गोयन्का, **धम्म लिच्छवी**, मुजफ्फरपुर के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री प्रवीण डागा, चेन्नई, **धम्म सेतु**, चेन्नई के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
२. श्री तेज नाथ झा, पटना, **धम्म लिच्छवी**, मुजफ्फरपुर के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
३. कु. ए. के. शशिकला, इगतपुरी
४. श्री बकुल ठक्कर, मुंबई
५. श्रीमती मीरा अंबवानी, ठाणे
६. श्री मारुती डगांवकर, मुंबई
७-८. श्री आनंद कुलकर्णी एवं श्रीमती kerrin O'Brien कुलकर्णी, इगतपुरी
९. श्री मधुकर काळे, नाशिक
१०. श्री शिवाजी जाधव, कोल्हापुर
११. श्री निवृत्ति पाटिल, कोल्हापुर
१२. श्री अच्युत पाल, वाडा

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्रीमती मीना काटे, सोलापुर
२. श्रीमती नीरू जैन, मुंबई
३. श्री संतोष जांभुलकर, नागपुर
4. Ms. Yanny Hin, USA
5. Mrs. Eva Sophonpanich, Thailand
6. Mr. Jianfeng Lin, China
7. Mr. U Win Myint, Myanmar

बालशिविर-शिक्षक

१-२. श्री कालिंद एवं श्रीमती मनीषा राठोड, गांधीनगर
3. Mr. Viboon Pratruangkai, Thailand
4. Mr. Amnart Rojphibunphan, Thailand
5. Ms. Phuttachat Soemsakun, Thailand
6. Mr. Wutthikrai Aramrueng, Thailand
7. Mr. Kit Mun Loke, Malaysia
8. Mrs. Mynah Sethuraman Raki, Malaysia
9. Mr. Seng - Tak Lee, Malaysia
10. Mr. Rajan Teagarajan, Malaysia
11. Mr. Gudaas Savankumar, Singapore
12. Mr. Thannickal Sukumaran, Singapore
13. Mr. Zengguan Ma, China.

शिविर-समापन की मैत्री देती हुई माताजी।

ताम्रपत्रों की अक्रलिक मंजूषा **'धम्म अवशेष'** को सन्निधान के लिए समर्पित करती हुई माताजी।

(ऊपर) पगोडा-शिलान्यास को मैत्री, (नीचे) **गोतम बोधि** वृक्ष का रोपण करती हुई माताजी।

मैत्रेय बोधि वृक्ष का रोपण करती हुई माताजी।

पूज्य माताजी का धम्मवाहिनी, टिटवाला में पदार्पण

५ मई, २०१५ को पूज्य माताजी मुंबई के समीप टिटवाला में बने विपश्यना केंद्र '**धम्म वाहिनी**' पर पधार कर नव निर्मित मुख्य साधना-कक्ष का उद्घाटन किया और ३ दिवसीय शिविर की **समापन-मैत्री** में भाग लिया। इसके अतिरिक्त धम्मकक्ष के पीछे शून्यागारयुक्त **पगोडा का शिलान्यास** किया और **गोतम बोधि** तथा **मैत्रेय बोधि** वृक्षों की पौधों का रोपण भी किया।

पगोडा के मध्यवर्ती शून्यागार (गर्भगृह) के ठीक नीचे गहराई में नींव के पत्थरों के साथ बुद्ध के कुछ सूत्रों (धम्मचक्कपवत्तन, पट्ठान एवं पटिच्चसमुत्पाद) तथा पूज्य गुरुजी के कुछ दोहों से लिखित (खुदे) ताम्रपत्रों को एक मोटी **अक्रलिक मंजूषा** में सुरक्षित रख कर पूरे सम्मान के साथ सन्निधानित किया, जिन्हें **'धम्म अवशेष'** कहा जाता है। यह भी बुद्ध अवशेष जितना ही सम्मानित होता है। इनमें से कुछ ताम्रपत्रों पर हिंदी और अंग्रेजी में द्वितीय बुद्ध शासन का संक्षिप्त इतिहास, विपश्यना प्रसारण में सम्राट अशोक का योगदान, बरमा की गुरु-शिष्य परंपरा और सयाजी ऊ बा खिन से लेकर गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के योगदान का संक्षिप्त इतिहास भी सँजोया गया है। सदियों बाद भविष्य में जब कभी खुदाई होगी तब इस मंजूषा में सुरक्षित बुद्ध-शिक्षा का अनमोल इतिहास लोगों के सामने आयगा। इस प्रकार धम्मवाहिनी की यह धरा ऐतिहासिक दृष्टि से अमूल्य रत्नगर्भा बन गयी जो साधकों की साधना में सहायक सिद्ध होगी।

आगामी आषाढ़ पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में एक-दिवसीय महाशिविर

2015-- 2 अगस्त, रविवार तथा २७ सितंबर, रविवार को 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' में पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर होंगे।

शिविर-समयः प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक. 3 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपोसुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170 022-337475-01/43/44- Extn. 9, (**फोन बुकिंग : 11** से **5** बजे तक, प्रतिदिन)
Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

अवसर आया धरम का, मत प्रमाद में खोय।
अब श्रद्धा श्रम लगन से, सतत ध्यान-रत होय॥

अहो! महासुख परमसुख, अनुपम सुख निर्वाण।
फीके सारे राजसुख, धन्य-धन्य सुख ध्यान॥

शीलवान के ध्यान से, प्रज्ञा जाग्रत होय।
अंतर की गांठें खुलें, मानस निर्मल होय॥

धन्य! ध्यान की गिरि गुहा, धन्य! ध्यान का स्तूप।
यहां शांति सब को मिले, भिक्षु होय या भूप॥

प्रज्ञा शील समाधि से, करें बुद्ध सम्मान।
यही बुद्ध की वंदना, करें विपश्यना ध्यान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

पांच सील धारण करूं, धरूं धरम रो ध्यान।
टूटै बंधन पाप रा, जागै अंतर ग्यान॥

पहली मंजिल सील है, दूजी मंजिल ध्यान।
तीजी प्रग्या पुष्टि की, चौथी मुक्ति निधान॥

आतै जातै सांस पर, रवै निरंतर ध्यान।
सहज सांस री सजगता, साधन आनापान॥

राग द्वेस जद भी जगै, राख उणांरो ध्यान।
ध्यान रह्यां उखड़ण लगै, रवै न नाम-निसाण॥

पढबा नै पोथी नहीं, लिखबा नै नहिं लेख।
ध्यान लगायो धरम मँह, धुलगी काळी रेख॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६,
अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2559**, **ज्येष्ठ पूर्णिमा**, **2 जून, 2015**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2015-2017**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2015-2017
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org